मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास और संस्कृति विभाग ने किया उनकी स्थायी विरासत और योगदान के सम्मान में पांचवां मुशीरुल हसन मेमोरियल व्याख्यान आयोजित

नई दिल्ली, 13 अगस्त, 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति विभाग ने 11 अगस्त 2025 को, एक प्रतिष्ठित इतिहासकार, प्रख्यात शिक्षाविद् और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पूर्व कुलपति, प्रोफेसर मुशीरुल हसन की स्मृति में पाँचवाँ मुशीरुल हसन स्मृति व्याख्यान आयोजित किया। यह व्याख्यान श्रृंखला आधुनिक भारतीय इतिहास के एक स्कॉलर के रूप में प्रोफेसर हसन की विरासत का सम्मान करती है, जिन्होंने सांप्रदायिकता, राष्ट्रवाद और मुस्लिम पहचान पर व्यापक रूप से काम किया। कुलपति के रूप में प्रोफेसर हसन के कार्यकाल ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया को एक समृद्ध बौद्धिक क्षेत्र के रूप में निर्णायक रूप से स्थापित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत इतिहास एवं संस्कृति विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर प्रीति शर्मा के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने जामिया के सामाजिक रूप से प्रगतिशील लोकाचार और विभाग की आलोचनात्मक विद्वता की परंपरा को याद करते हुए अतिथियों, वक्ताओं, शिक्षकों और छात्रों का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने प्रोफेसर हसन की विशिष्ट ऐतिहासिक लेखन शैली, अकादमिक विमर्श के स्वर को नया रूप देने में उनकी भूमिका और जामिया के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक विकास में उनके योगदान पर चर्चा की।

इसके बाद इतिहास एवं संस्कृति विभाग के डॉ. जावेद आलम, प्रोफेसर हसन के पूर्व छात्र ने एक स्मृति भाषण दिया। डॉ. आलम ने अपने शिक्षक का स्नेहपूर्ण और विस्तृत चित्रण किया, जिसमें जामिया में उनकी 36 वर्षों की सेवा, 32 वर्ष की आयु में प्रोफेसर पद तक उनके उत्थान और उनके विपुल शैक्षणिक जीवन - 17 पुस्तकों के लेखक और 36 अन्य का संपादन - का वर्णन किया गया। उन्होंने मोहम्मद अली जौहर जैसी हस्तियों पर हसन के विद्वता और भारत में मुसलमानों के बारे में डिस्टॉर्टेड नेरेटिव्स के उनके सुधार पर प्रकाश डाला। डॉ आलम ने हसन के विभागाध्यक्ष, डीन, प्रो- वाइस चांसलर और अंततः वाइस चांसलर के रूप में प्रशासनिक दृष्टिकोण को भी याद किया, जिसके दौरान उन्होंने 30 नए केंद्र स्थापित किए, 325 संकाय पदों का सृजन किया, छात्रावासों का विस्तार किया और बौद्धिक संस्कृति को मजबूत किया। दिन के कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्रोफेसर रामचंद्र गुहा, एक प्रतिष्ठित इतिहासकार और जीवनी लेखक का मुख्य व्याख्यान था, जिसका शीर्षक था "गांधी को जानना: एक जीवनी लेखक की यात्रा।" प्रोफेसर गुहा का परिचय देते हुए, विभाग की स्नातकोत्तर छात्रा फरजाना फजल ने उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि को रेखांकित किया, जिसमें दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स और आईआईएम कलकत्ता में उनकी पढ़ाई, येल, स्टैनफोर्ड और एलएसई में उनकी फेलोशिप और पर्यावरण इतिहास, राजनीति और क्रिकेट में उनके व्यापक कार्य शामिल थे।

अपने व्याख्यान में प्रोफेसर गुहा ने 1982 में अभिलेखागार में प्रोफेसर मुशीरुल हसन के साथ अपनी पहली मुलाकात को याद किया और हसन के खुलेपन, उदारता और विद्वतापूर्ण नेतृत्व की प्रशंसा की। इसके बाद उन्होंने महात्मा गांधी के जीवनी लेखक के रूप में अपनी यात्रा का वर्णन किया और गांधी के जीवन के कई कम-ज्ञात प्रसंगों पर प्रकाश डाला। गांधी और उनके राजनीतिक आंदोलन के रूढ़िवादी, उद्देश्यपरक आख्यानों से आगे बढ़ते हुए, प्रोफेसर गुहा ने बताया कि 1960 के दशक से गांधी की छवि की विभिन्न व्याख्याएँ कैसे की जाती रही हैं। गांधी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास से लेकर पर्यावरण और जाति-विरोधी आंदोलनों पर उनके स्थायी प्रभाव तक, विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से, गुहा ने प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया कि कैसे, अपने जीवनी लेखन के दौरान, उन्होंने गांधी को

विविध क्षेत्रों में देखा- खेल और सामाजिक पदानुक्रम के क्षेत्र से लेकर चिपको आंदोलन द्वारा प्रदर्शित पर्यावरणीय चिंताओं तक। व्याख्यान का समापन भारतीय शिक्षा जगत, विशेष रूप से जीवनी लेखन के संदर्भ में, चुनौतियों पर चिंतन के साथ हुआ। इसके बाद प्रोफेसर एस. इरफान हबीब ने अपनी टिप्पणियाँ दीं, जिन्होंने भारत की बौद्धिक परंपराओं की विविधता पर प्रकाश डाला और गांधी को इस बहुलवादी संदर्भ में स्थापित किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर मजहर आसिफ़ ने समापन भाषण दिया। उन्होंने गांधी और प्रेमचंद से अपने प्रभावों के बारे में बात की और बताया कि कैसे जामिया इन विरासतों को आगे बढ़ाने में सफल रहा है। उन्होंने जामिया के इल्म, तालीम और तरबियत (ज्ञान, शिक्षा और नैतिक पालन-पोषण) के दर्शन पर ज़ोर दिया और कहा कि शैक्षणिक विकास के साथ-साथ नैतिक विकास भी ज़रूरी है। उन्होंने हाशिये पर पड़े लोगों की समस्या का समाधान करने की ज़रूरत पर भी विचार किया, जो प्रोफ़ेसर हसन के काम का एक केंद्रीय मुद्दा है।

कार्यक्रम का संचालन विभाग की स्नातकोत्तर छात्रा सानिया आफ़रीन ने किया और विभाग की ही स्नातकोत्तर छात्रा हंसिका के धन्यवाद ज्ञापन दिया और राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रोफ़ेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी